आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 2/मार्च 2023
Received: 20/01/2023; Published: 24/03/2023

नाटक

तबाही

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

मूल: डॉ. डी. एस. चौगुले (कन्नड़)

अंक – दूसरा

दृश्य-7

(प्रकाश, निवेदक आता है। एक ओर जाकर खड़ा होता है। उस पर प्रकाश।)

निवेदक : अजी... मैं कहीं गायब हो गया हूँ... ऐसा समझ बैठे हो क्या? मैं आपके साथ ही हूँ... वो मेरे पीछे पडे थे न... उस मोर्चे में मिले वे आदमी.... उनमें शामिल होकर मैंने अपना सिर बचा लिया है... वे आंदोलन में आए हैं...यहाँ एक मठ में बैठे हैं... वहाँ क्या चल रहा है वह पहले जान लेते हैं.... मैं थोडा छूपा रहता हूँ... पर पता नहीं कब टपकूँगा यहाँ... अभी आता हूँ.... (चला जाता है। अंधेरा)

(प्रकाश) (विरक्त मठ, वहाँ उपस्थित आंदोलनकारी स्वामी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। पीछे से अल्लमप्रभू का वचन सुनायी देता है। कुछ ही क्षणों में स्वामी का आगमन होता है। पैसंठ के आसपास की आयु। चेहरा तेजस्वी। उनके पास एक शिष्य, स्वामी जी के आते ही आसपास के नमस्कार करने लगते हैं। स्वामी विराजमान होते हैं।)

स्वामीजी : आपके यहाँ आने का कारण मालूम हुआ है.... मैं समाचार पत्र के समाचार पढ रहा हूँ।

व्यक्ति 1 : हडताल और आंदोलन जोर-शोर से करने पर भी और प्रार्थनापत्र देने पर भी कुछ लाभ नहीं हो रहा है। आपको इसमें भाग लेना ही होगा।

व्यक्ति 2 : महाराज, सरकार का ध्यान आकृष्ट करने मोर्चे निकाले, अखबार में लेख छापे, पर कुछ परिणाम नहीं हुआ। पर लोगों में जागरुकता आयी है। वह वनसंपदा बचानी ही होगी। इसलिए लोग आग्रह धरने लगे हैं। आपको तो पता ही होगा...।

स्वामीजी : हम और हमारा मठ हमेसा जनता के साथ ही हैं।

व्यक्ति-5 : इसमें सारे डिटेल्स हैं देखिए... (स्वामीजी को रिपोर्ट देता है।) महाराज, आप विधायक को बुलाकर उनसे बात करेंगे तो कुछ बात हो सकती है। पर वह बहुत ऊदंड है। वह किसी की बात नहीं सुनता। चाहो तो पूछ लीजिए इन लोगों को।(स्वामी रिपोर्टसे नज़र घुमाते हैं।)

सभी : जी महाराज....।

व्यक्ति-1 : आप मुख्यमंत्री से ही बात कर लीजिए...।

व्यक्ति-5 : इस आंदोलन और हड़ताल को न जाने कितने दिन हो गए। इसकी कोई तो महत्व होना चाहिए कि नहीं? (स्वामी का शिष्य बीच में ही प्रवेश करता है।)

शिष्य : आप लोग थोडा रुकिए... महाराज रिपोर्ट पढ़ रहे हैं...। (स्वामीजी रिपोर्ट पर से नज़र घुमाते हैं और आंदोलनकारियों से बात करने लगते हैं।)

स्वामीजी : अच्छा है। इन्हीं वनस्पतियों से ब्रिटीश लोग औषधियों का निर्माण किया करते थे। यह वनस्पतियाँ उन दिनों विदेश में भी निर्यात की जाती थी। आजादी के बाद भी भेजी जा रही है। ब्रिटिशियों को इसका जितना महत्व मालूम था उतना ही हमारे राजनेताओं को भी था। उन्होंने उन वनस्पतियों का पोषण किया और उसे बढाया। यह एक औषधि गुणधर्म का सोशियल प्रॉडक्ट है। पर दुर्भाग्य यह है कि आजकल के राजनेताओं को इसकी कीमत ही नहीं है। उसमें से उनको कुछ भी नहीं चाहिए....अब बहुत हडताल हुए... (शिष्य से) ये बाबा, सी.एम. साहब को फोन लगाओ...।

(शिष्य फोन लगाता है।)

(रंगभूमि पर दूसरे कोने में सी.एम. का नीजि कमरा। पास में दो स्वीय सहायक हैं... उनपर प्रकाश)

स्वीय स. : सर...। विरक्त मठ के स्वामी जी का फोन हैं...।

मुख्यमंत्री : इसमें क्या है.. बोल दो कुछ भी... कह दो मीटींग में हैं... ये स्वामी गरम घी की तरह हैं...।

स्वीय स. : सर..आप तो जानते ही हैं...।

मुख्यमंत्री : ये गेरुएधारी चुप नहीं बैठ सकते.... मठ का काम करते बैठना चाहिए.... ये बसव..अल्लमप्रभू के वचन गाते रहना चाहिए इनको.... फोन दे मेरे पास.... वह दोबारा लगाएंगे ही....। (फोन देता है।)

स्वामी जी : नमस्कार साहब कैसे हैं आप.. सब आराम है न?

मुख्यमंत्री : जी नमस्कार... वैसा ही हूँ.... हमारे नसीब में आराम कहां? कहिए.. क्या सेवा करूँ...?

स्वामीजी : यहाँ एक ऐसा परिसर है जो ब्रिटिशकाल की वनस्पतियों से युक्त हैं। आपके दल के लोग अब औद्योगिक बस्ति निर्माण करने में लगे हैं.. उसे रोकना होगा।

मुख्यमंत्री : मीडिया ने वह बात मेरे सामने लायी है, महाराज।

स्वामीजी : इस संपत्ति का विनाश हो जाए तो फिर उसका निर्माण होना असंभव... और तो और आसपास किसानों के जमीने हैं। एक तो अब किसान भी आत्महत्या करने लगे हैं... और अब इसकी परेशानी। किसान जिए तो जिए कैसे...? यह सब हमें रोकना चाहिए।

मुख्यमंत्री : महाराज.. आपकी हर बात सही है... मुझे भी यह सब सही ही लगता है। पर हमारे पक्ष के अंदर जो चल रहा है उसे भी आपको समझ लेना चाहिए... अविश्वास का तूफान मचा है। महाराज, तूफान में फँसे जहाज के कप्तान सी हालत हो गयी है मेरी। कृपा करके आप तो समझ लीजिए न..।

स्वामीजी : ऐसी बात नहीं है साहेब... वैदिक मठ के स्वामीजी ने जब मीडिया के सामने भूख हडताल करेंगे कहा तो आप उनके पास दौडकर चले गए.. वहाँ भी ज़मीन पर कब्जा हो रहा था तब आपने उसे रोक लिया। वहाँ से एमएनसी ने भी अपने पैर उठा लिए। वह अच्छा ही हुआ.... आप उनकी तो सुनते हैं... फिर हमारी बात में क्या जंग लगी है?

मुख्यमंत्री : ऐसा कुछ नहीं है.... आपकी भी तो सुननी चाहिए न। पर आपके इलाके के विधायकों को कौन समझाएगा....उनके सामने मेरे हाथ बंधे हैं।

स्वामीजी : अजी साहब..पहले जनहित का सोचिए... लोगों ने आपको वोट दिया है...आप उनका साथ दिजीए... हमारे मठ के सामने हजारों लोग आंदोलन कर रहे हैं.. बाहर मीडियावाले भी राह देख रहे हैं। यहाँ आकर आंदोलनकारियों के नेता लोग कहते हैं कि, 'सी.एम. साहब आपकी सुनते हैं। बताइए उनको'। मैंने कहने का काम किया है। इसके बाद आपकी इच्छा।

मुख्यमंत्री : महाराज, गलतफहमी मत रखिए... हमारे मस्तक पर हमेशा आपका आशीर्वाद बना रहे। परिस्थिति देखकर आपको सूचित करता हूँ। नमस्कार।

(स्वामीजी शिष्य के पास फोन देते हैं।)

स्वामीजी : बाहर मीडियावाले होंगे...उनको अंदर बुलाओ।

(मीडिया के प्रतिनीधि को बुलाने एक जाता है। अंधेरा।)

.....

दृश्य-8

(प्रकाश)

(बापुसाब का घर, दोपहर का समय)

(सरकारी कार्यालय का एक कर्मचारी बापुसाब से मिलने आया है। पास ही में रुक्कव्वा चिंतातुर बैठी है। बापुसाब बाहर से अंदर आते हैं। थके हुए हैं।चेहरा चिंतातुर हैं।)

बापुसाब : (प्रवेश करते हुए) रामराम साहेब... मैं आपके पास ही गया था...सब कुशल मंगल है न साब... ?

अधिकारी : कैसा कुशल और कैसा मंगल.... हमें आराम करने छोडे तो कुशल न...।

बापुसाब : आप लोगों का आराम छुट गया ऐसा कैसे संभव हैं?

अधिकारी : तुम कुछ भी नहीं कर रहा हो इसलिए हमें आराम नहीं मिल रहा है...मुद्दे की बात ही कहता हूँ.. तूम अपने उस खेत के बारे में कोई निर्णय नहीं ले रहे हो और ऊपर बैठे साहब हमें ढिला नहीं छोड रहे.... सर दर्द ही हो गया है सब..।

बापुसाब : सरदर्द काहे का साब? मेरी खेत जमीन लेने के लिए इतना ज्यादा दबाव डालेंगे तो कैसे होगा.... खेत मेरा और मर्जी भी मेरी..।

अधिकारी : यूँ खेत तुम्हारा होगा पर मर्जी तेरी नहीं हो सकती...यहाँ सरकार की मर्जी आखरी मर्जी होती है...(थोडा रुककर) तेरा भरमू आया था। वह मना नहीं कर रहा है।

रुक्कव्वा : (गुस्से से) वह हरामी वहाँ भी पहुँचा क्या?

बापुसाब : (तुंरत) रुक्कु... चुप रह...(वह दुखी होकर चली जाती है।)

अधिकारी : खैर, वो जाने दो....तुम विरोधी पक्ष के विधायक के पास गए थे क्या?

बापूसाब : जी हाँ... गया था। जाना नहीं चाहिए? फिर हम अपनी गुहार किसके सामने रखे ? सबके काम मन से करनेवाला वही एक मात्र इन्सान है।

अधिकारी : वही तो एक बडी समस्या है। तुम्हारा क्या है.. चले जाते हो जी... पर इन विधायकों में हम पिसते रहते हैं न...कहते है न कि.... दो पाटो के बीच में साबुत बचा न कोय.. वैसी ही हालत हो गयी है हमारी। वे विरोधी पक्ष के विधायक... जिनके पास तू गया था न ..

बापुसाब : जी, पर .. आपके साब ने क्या किया...?

अधिकारी : मेरे चेंबर में आए थे.. अपने शर्ट की बाहें ऊपर चढाकर.. बुरे बुरे शब्दों में गाली गलोच की... तुम्हें उठवाऊँगा... ऐसी धमकी भी दी है।

(बापुसाब मौन होते हैं।)

हं.. गहरे पानी पत्थर डालने के समान तुम यहाँ चुप रहते हो। फिर उस विधायक के सामने अपनी तुती बोलते हो। फिर वो हमारी बैंड बजाते हैं।

बापुसाब : मैं उनके पास गया था... ये सच है...मेरा खेत बचा दो इतना ही मैंने कहा है उनको...मैंने किसी की भी शिकायत नहीं की है।

अधिकारी : उन्होंने तुम्हारा कुल गोत्र तक बता दिया... वह सब वो कैसे जानते हैं?

बापूसाब : पेपर और टी वी में भी तो आया है न साब....वही देखकर आपसे कहा होगा...(थोडा रुककर) औऱ हां... अब मैं वो जो मंत्री होनेवाले हैं ना उनके उन विधायक जी के पास भी जानेवाला हूँ।

(अधिकारी शांत होता है.. समझाने का प्रयास करता है।)

अधिकारी : ऐसी बात नहीं है रे.... हवा के साथ लडकर हाथ पैर में भला दर्द क्यों मोल ले.. ? मैं अपने अनुभव से बताता हूँ... उसमें तुम्हारा ही लाभ है। तुम्हें मुख्यमंत्री के पैकेज से पैसा देने, कुँआ खुदवा देने का प्रबंध करता हूँ... दूसरे स्थान पर खेत ले लो.... यह छोड दो..।

बापुसाब : (गंभीर होते) हां...देंगे आप पैसा....देने को क्या है? पर मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। विदर्भ के पैकेज के बारे में आपने सुना ही होगा न साहब। जान जाने के बाद मिलनेवाला पैकेज। वो लेकर क्या करें? वहाँ की सरकार ने दिया पंपसेट... बुढे के दाँत गिर जाए वैसे चार दिन में बंद पड गया। मुख्यमंत्री का पैकेज यानी किसानों की आँखें पोंछने का एक तंत्र है.. ऐसा वहाँ की संगठनाएं बोंब मार कर कह रही हैं। (रुक्कव्वा आती है)

अधिकारी : पैकेज योजनाएँ अच्छी ही होती हैं... पर लुपहोल से वह चुने लगती हैं।

रुक्कव्वा : (बीच में ही प्रवेश करते हुए) अय्यो... जाने दो साब... विदर्भ के लोगों तक भी पैकेज यदि सही सलामत पहुँचा होता तो कितने ही किसानों की जान बच जाती। हमारे वारकरी विठ्ठल ने जो कहानियाँ बताई हैं सुनकर कलेजा कांप जाता है।

अधिकारी : अरी रुक्कव्वा... ऐसा कहने लगी तो हम क्या बोले?

रुक्कव्वा : वारकरी विठ्ठल ने ही नहीं कहा साहब... महाराष्ट्र से कुछ महिलाएँ आयी थीं... बाढ से जो नुकसान हुआ है उसकी थोडी सी भरपाई करने के लिए।.. उन्होंने जो कहा वह बताती हूँ... किसान ने आत्महत्या की है यह खबर सुनकर एक विदिशी आदमी ने अपनी सारी संपत्ति उस किसान के परिवार को दी है.... वह पुण्यात्मा सच्चा इन्सान है... इसको कहते है इन्सानियत... कौनसा देश और कौनसा कुल-परिवार...सबको पार कर उसने मनुष्यता दिखाई। अब हमारे लोग भी हैं... बेकार।

अधिकारी : आपको जो मिलेगा वह चेक से ही मिलेगा।

रुक्कव्वा : हां जी... वो कितने दिन चलेगा... कमर की धोती न छुटे और अचानक अमीरी भी न आवे।

बापुसाब : पैसा बडी बात नहीं है साहब... सबकुछ पैसे से ही तोला नहीं जाता।

अधिकारी : देख बापु... तुम्हारे भले के लिए कह रहा हूँ... सरकार यानी सरकार ही होती है... यह समझ लो... वह सांड ही होता है...फसल में घुस गया तो सारा सत्यानाश..... किसे भी उसे रोकने नहीं आता।

बापु साब : जनता जनार्दन नहींहै क्या साब? इस लोकतंत्र में सांड को भी नकेल डालने की ताकद होती है।

अधिकारी : (निराश होते हुए) देखो, विषय बढाया तो बढता ही जाता है। बाकी सबने बेच दी है अपनी जमीन... तु अकेला ही बचा है... ख्वामखाह अकड मत दिखाओ... तू जैसे समझ रहा है वैसे कुछ भी सरल नहीं होता... फिर तुम जानो...। (उठकर खडा होता है)

बापुसाब : माफ कीजिए साहब... हम लोगों ने खेत की चिंता में चाय तक नहीं पूछी। (रुक्कव्वा से) रुक्कव्वा, साहब के लिए चाय चढा दो।

अधिकारी : नहीं नहीं बापु.. और किसी दिन आता हूँ... मैंने जो बताया है उस पर सोच विचार करो।

(अधिकारी चला जाता है। बापुसाब चिंताक्रांत बैठा है। रुक्कव्वा उसके पास आती है।)

रुक्कव्वा : अब क्या करें?

बापुसाब : (थोडी देर सोचकर) कुछ भी हो मैं अपना खेत नहीं बेचुंगा।

रुक्कव्वा : (होले से) पर भरमू बेचने की कह रहा है न... वह किसी मुश्किल में है शायद... पहले जैसा खेती में कुछ नहीं रखा है। कितना खटे।

बापुसाब : तू भी ऐसा ही सोच रही है?

रुक्कव्वा : मैं सच बता रही हूँ। यूँ मैं कहाँ चाहती हूँ कि खेत बेच दे।

बापुसाब : तुम्हें बेटे की फिकिर हो रही है क्या? उसे चाहे जितनी मदद करो उसकी मुश्किलें कभी खतम नहीं होगी।

रुकव्वा : अलग हो गया तो क्या हुआ बेटा तो अपना ही है।

बापुसाब : (थोडी देर रुकर) मेरा खेती बेचना असंभव है। बेचकर कहाँ जाऊँ? कहीं किसी शहर में? कुलीगिरी करने या किसी विदेशी कंपनी में वाचमनी करने? हमें तो कोई उद्योग धंदा करना भी नहीं मालूम। रखा हुआ पैसा अगर किसी न किसी कारण खर्चा हो गया तो कल कोई भीख भी नहीं देगा। यह सब तुम्हें समझनेवाली बातें नहीं है।

हमारे थाली का चावल और रोटी हमारी होती है...दूसरों का यानी मेरी नज़र में जुठन ही।

(रुक्कव्वा चिंताग्रस्त होती है।) मैं विधायक के पास जाकर आता हूँ। (बापुसाब चला जाता है। उसकी दिशा में रुक्कव्वा देखती रहती है।

(अभंग)

(धीरे धीरे अंधेरा)

.....

दृश्य-9

(प्रकाश), वही सर्कल, गांधी जी का पुतला, फ्लैक्स में विधायक जी को शुभकामनाएँ और एमएनसी के आगमन से जो विकास हुआ है उसके बारे में जानकारी और नारे...निवेदक आता है। उसपर कुछ अधिक प्रकाश। सिगरेट निकाल कर पीने लगता है। पीछे से अंभग के बोल सुनायी देते हैं।)

अभंग

निवेदक : (सिगरेट बुझाता है) जनता की उदारता, उनकी प्रापर्टी कनवर्ट करने की, संपत्ति बढाने की इनकी आदत नहीं जाती।(गाँधी के पुतले की ओर देखते हुए उनको संबोधित करते हुए) आपका गाँव कहलानेवाले उन लोगों ने आज शीलभ्रष्ट होकर शहर नाम की उच्च पुरुषवेश्या के साथ संबंध स्थापित किया है।

(तभी एक दल जोर जोर से नारे लगाते रंगमंच पर आता हैं और चला जाता हैं। बचाओं बचाओ हरियाली बचाओ...विधायक मुर्दाबाद, नहीं चलेगी नही चलेगी भूखबलि नहीं चलेगी। हाथ में फलक) अंधेरा।

(प्रकाश) विधायक का निवासस्थान। वहाँ एक ओर लोगों से मिलने के लिए एक कमरा है। बापुसाहब वहाँ कुछ कागजात लेकर खडे हैं।

(निवेदक बापुसाब के पास आते हैं।

निवेदक : (धीरे से खाँसते हुए) आप विधायक जी से मिलने आए हैं क्या?

बापुसाब : जी... इसके अलावा मेरा और क्या काम हो सकता है?

निवेदक : यूँ विधायक जी किसी को अपने मूँह नहीं लगाते। बहुत ही बेकार इन्सान है।(थोडा रुककर) अगर ये बात है तो आप अभी तक अंदर क्यों नहीं गए।

बापुसाब : अंदर के आदमी ने इंतजार करने के लिए कहा है।

निवेदक : तूम उस मोर्चे में थे ऐसा लगता है।

बापुसाब : जी हाँ..था। पर आप कौन है?

निवेदक : मैं.. मैं ही। एक अजनबी। भूत, वर्तमान और भविष्य का साक्षी। चलता हूँ। (भाग जाता है।)

बापुसाब : जो चाहे बकता है... दीवाने की तरह। (अंधेरा)

(प्रकाश, विधायक कमरे में हैं। सामने दो तीन अधिकारी स्तब्ध खडे हैं। कमरे में सन्नाटा है। अधिकारी के मन का डर उसके चेहरे पर दिख रहा है। फाईल देखनेवाले विधायक को गुस्सा आता है। गुस्से से)

विधायक : जो कहा था वो काम तो आप से हुआ नहीं। किसी लायक नहीं है आप।

अधिकारी-1 : (डरकर) साहब बहुत कोशिश की।

विधायक : क्या किया आपने। कहीं कोई प्रगती नहीं हुई है। मुझ बहाने नहीं चाहिए। आई वॉट रिजल्ट्स।

अधि-1 : साहब, पर्यावरणवादियों का तीव्र विरोध चल रहा है। मीडियावाले भी पीछे लगे हैं। केंद्र से एक टीम पूछताछ के लिए आने की संभावना है।

विधायक : अरे... यह सब सुनने के लिए मैं यहाँ बैठा हूँ, ऐसा लगता है क्या तुम्हें। आंदोलन करनेवाले चार दिन बकते है और फिर चुप हो जाते हैं। (बडबडाते हुए)

अधि.2 : सर, वह ब्रटिशकालीन फार्म है सर। आप जानते ही हैं कि वहाँ एक तालाब हैं। उसे अंग्रेजों की किसी रानी ने बनवाया था यह भी आप जानते हैं। (समझाने का प्रयास करते हुए) साहब, वह पक्षीधाम है। वहाँ परदेश से प्रवासी पक्षी आते हैं। साथ ही वहाँ मनुष्य के लिए उपयोगी ऐसी औषधी वनस्पतियाँ हैं। जिसकारण बहुत बडा नुकसान हो सकता है। ऐसा आंदोलनकारियों का कहना है।

(तीसरा अधिकारी इसी विषय से संबंधित कुछ अन्य प्रमाण देता है। विधायक वह सूक्ष्मता से देखने लगते हैं।)

विधायक : हो गया... खतम हुई आपकी बातें... देखिए... ऐसे कारण बताकर मेरा दिमाग मत खाओ...केंद्र से टीम आए या परदेश के पशुपक्षी... मैंने शब्द दिया है.. मैं उनको क्या बताऊँ...हजारों करोड का प्रोज्क्ट है। उस पर उस तालाब का पानी लाकर छोड दूँ.. मै अपनी बात से मुकर नहीं सकता... ये लो फाईल... (फाईल फेंक देते हैं।) आप कैसे करोगे यह मैं नहीं जनता... कुछ भी करों पर काम होना ही चाहिए... हं...चलिए.. जाइए... जबतक काम नहीं होता अपना मूँह मत दिखाना....।

(अधिकारी पसीना पोंछते चला जाता है।)

(एक मीडियाकर्मी अंदर आता है। यही उचित समय है समझकर बापुसाब भी अंदर घुसते हैं।)

मी.क : पायलागी भाईसाहब... ठीक है ना....(पैर छूकर नमस्कार करता है)

विधायक : मेरी नींद ही उड गयी है। आजकल हमारी पार्टी के लोगों को बहुत दिखा रहे हो... हम क्या यहाँ चने भुन रहे हैं... अंदर से वह तलवार उठा रहा है... ऊपर के लोगों को कुछ भी कहते रहता है... और आप उनकी ही बजाते हैं...।

मी.क. : ऐसा कुछ नहीं साहब... आपने बाढ-पीडितों की जो मदद की थी... वह हमने दिखाया ही था...कुछ ज्यादा ही दिखाया था... (थोडा रुककर) आप ही कहिए यूँ एकदम से छोडना भी नहीं आता है न...।

विधायक : मत छोड बाबा...और हमारे बारे में दिलाता हूँ ...दिखलाता हूँ कहकर टाल रहे हो... अपने ही हमारे दुश्मन ... लेकिन उनको... ज्यादा वेटेज...क्यों... (मीडियाकर्मी निरुत्तर होता है।)

(अबतक दूर खडा बापूसाब यही समय ठीक है समझकर विधायक के पैरों पर गिर पडता है।)

बापुसाब : साहब, मेरी खेती बचा लो। वह ज़मीन मेरी जान है। आपके पैर पकडता हूँ साब। (दयनीय होकर) (अचानक आए प्रसंग से विधायक हडबडा जाते हैं।)

विधायक : अरे अरे... उठ.. उठ....ये सब क्या है...(अपने पैर छुडा लेते हैं। बापुसाब मूँह ऊपर करता है।)

अरे बापु तुम.... अरे कितने पीछे पडे हो मेरे .... तुम्हें बताया है न कि नुकसान की आपूर्ति में लाखों रुपये मिलेंगे... इतना ही नहीं तुम्हारे बेटे के लिए फैक्टरी में नौकरी भी देंगे। यह बताया है ...है न?

बापुसाब : (दयनीय होकर) वो जमीन मेरी जी-जान है... अगर वही नहीं रही तो फिर मैं कैसे जीऊँ... जीना संभव ही नहीं है। हमारे पुरखों से हमारे खेत में हमारे पुरखों की आत्मा है साहब...।

विधायक : अरे..क्या आत्मा बित्मा.... हां.. ?

बापुसाब : पीढि दर पीढि से हमारे पुरखों के मकबरे हमारे खेत के एक कोने में हैं। हड्डियों से भरी मटकियाँ उन मकबरों में हैं। इसलिए हम ने वह खेत पीढियों से नहीं बेचा है। आपके पैर पडता हूँ.. कुछ भी कीजिए पर जान से प्यारी हमारी जमीन बचाइए..। (फिर पैरों पर गिरता है।)

विधायक : (पैर छुडा लेता है।) पैर छोड रे बाबा.... तेरी तो... पैर ही पकड लेते हो न...(बापु वहीं घुटनों के बल बैठता है।)

मी.क : (स्वगत) अरेरे... एक अच्छी स्टोरी मिस हो गयी।

विधायक : क्या कहा?

मी.क : कुछ नहीं... परसों स्वामी जी ने भी सीएम, साहब को जोर देकर कहा है...।

विधायक : तुम्हें क्या लगता है... ये मुझे मालूम नहीं है...आप लोगों ने वह ब्रटिशकालीन वनस्पतिवाली जमीन ले रहे हैं ...इस खबर को बिगन्युज करके दिखाया है..दिखाओ... (थोडा रुककर) आपको बताता हूँ.... चूहा पकडा तो शेर पकडा है ऐसी खबर देते है आप लोग... चौबास घंटे बस वही एक ही रट... एक ही...।

मी.क : (मुस्कुराते हुए) हमारा पेट भी तो भरना है ना .... पर इस मामले पर काफी चर्चा हुई है...आंदोलन भी...।

(विधायक को गुस्सा आता है।)

विधायक : (बापु को संबोधित करते हुए) आपका मामला मुख्यमंत्री तक गया है। (समझाते हुए) अरे बाबा, तुम्हारे आसपास की सारी जमीन किसानों ने बेच दी है। उनको ढेर सारा पैसा भी मिला है। तुम्हारी अकेले की ज़मीन बीच में रह गयी है....पैर में कांटा चुभ जाय ऐसी...। काँटा हो या जहर शरीर अंदर रख नहीं लेता और अगर रख लेता है तो पैर सडने लगता है। आप तो जानते है कि सडनेवाला पैर कांट देते हैं। समझ लो पगले...।

बापुसाब : डूबते को तिनके सहारा... इसलिए आपके पास आया था... आप ही ऐसा बोलने लगे तो फिर हम क्या करेंगे... खेती के अलावा मुझे और कोई काम आता नहीं। (थोडा रुककर) बेटा भी होशियार नहीं... फट्टु है...।

विधायक : तकनीकी दोष से देर हुई है... नहीं तो...(थोडा रुककर) बापु देखो.... सोचो.... ढेर सारा पैसा मिलेगा... मत छोडा...।

बापुसाब : इतना पैसा तो मैंने कभी देखा न सुना....पर यही पैसा इन्सान को बरबाद करता है।

(विधायक गुस्से से)

विधायक : अरे... तोते को समझाया जाय ऐसा समझाने पर भी क्या तू समझ नहीं रहा है...हां... चल निकल....निकल... मुझे जाना है....।

(तैश में उठता है। मीडियाकर्मियों को) आते रहना....संभव हो तो इस आदमी को समझाओ...(विधायक जाता है। बापुसाब पर आघात होता है।)

.....

दृश्य-10

(बापुसाब का घर। रात का समय। सोया है। बापुसाब पर प्रकाश। उसे कोई बुरा सपना आता है। सपने में एजंट गरुड, वारकरी कौवा और भरमू उल्लु बना है। आधा शरीर मनुष्य का और आधा पक्षी का। चौसर का खेल चल रहा है। सभी एक दुसरे को देखेते हैं और एकदूसरे को आवाज़ देते हुए जोर जोर से हंसते हैं।)

एजंट : मैं गरुड... विष्णु का सेवक... आई मीन.. अधिकारयुक्त देवाधिदेव का विनम्र सेवक। अधिकारी देव मुझ पर बैठकर अपनी इच्छापूर्ति के लिए भारतखंड के कर्नाटक प्रदेश की परिक्रमा करते हैं.... क्योंकि मेरी आँखे एकदम तीक्ष्ण है.... ऊँचे आसमान में भले ही मैं ऊडान

भर लूँ पर ज़मीन पर स्थित बारीक से बारीक कीडे मेरी नजरों से बच नहीं सकते... अब इस भूमि के गुण मुझे पता नहीं होंगे क्या?

वारकरी : तेरा जन्म कैसा हुआ वह ज़रा बताओ न..।

एजंट : हां हां... सुनो तो फिर.... मेरी जन्म कहानी ही विचित्र है.... महाभारत में आता है न... आधा मनुष्य और आधा गरुड... सोने के पंखोंवाला अतिमानुष जीव हूँ मैं। मेरे रिश्तेदार कौन है पता है तुम्हे?

वारकरी : कौन?

एजंट : गिद्ध। अगर वे श्वेनी के पेट से पैदा हुए हो तो..(भरमू के सिर पर मारते हुए) इस उल्लु की माँ क्रौंची।

वारकरी : तेरा जन्म कैसा हुआ वह बोल न...।

एजंट : थोडा धीरज रख न... मैं सूर्य से भी अधिक तेज से प्रज्वलित होने के कारण देवताओं की प्रभा नष्ट हो गयी। वे सब मिलकर अग्नि देवता के पास गए। हमारी ऐसी दशा का क्या कारण है ऐसा पूछने लगे। तब अग्नि महाराज ने मेरे जन्म की शक्ति तो बतायी पर मेरा जन्म कैसा हुआ यह नहीं बताया। वे सब मेरे पास आए और मुझे आशीर्वाद दिया।

भरमू : वाह...। तुझे आशीर्वाद दिया?

एजंट : आगे भी तो सुनो... "तुम तो बाबा पक्षीराज... तू ही अगर ऐसा जगमगाने लगे तो फिर क्या होगा.. ? हमारी क्या गति होगी? हमें कोई पूछेगा तक नहीं?... तू अपना छोडा प्रकाश आई मीन लाइट कम कर दो न..." ऐसा कहके याचना करने लगे। मैंने भी ठीक है कहकर कम कर दिया।

मैंने एकबार केवल पंख ही फडफडाए तो बस... तीनों-लोक थरथर कांपने लगते हैं। देवताओं के लिए अमंगल हूँ... पर कई देवताओं ने मेरी मदद ली है। अभी वर्तमान में मैं विधायक, सांसद आदि की मदद करता रहता हूँ... गुप्त धन, खजाने से युक्त ही नहीं अच्छी कीमत की जमीन भी मैं क्षण में खोज देता हूँ। ऐसी महान, अद्‌भुत शक्ति रखनेवाला मैं गरुड हूँ। गरुड..रियल इस्टेट एजंट गरुड कहते हैं मुझे... जिद से मैं उस बापुसाब को इस खेल में खींच लाया हूँ... तू बोल...वारकरी ऊर्फ कौवे..।

वारकरी : मैं कौवा...अस्पृश्य पक्षी... मेरा कोयल का बनता नहीं... हम जन्मजात दुश्मन... यह मत समझना कि मुझमें दयामाया नहीं... मैं शरण-संतों का प्रिय पक्षी हूँ... कौवे ने रोटी का टुकडा देखा... गाकर मेरी प्रशंसा की है उन्होंने। अपने आप्तों को बुलाये बगैर हममें से एक भी अकेला नहीं खाता है। मैं कर्कश आवाज धारण करता हूँ और मेरे अंदर कपडा ठूस ठूस कर भरा है... मेरा जन्म कैसे हुआ बताऊँ.. ?

एजंट : बताओ न..।

वारकरी : तुमने तो इधर उधर की बाते की पर सच नहीं बताया... मेरी सुन...

एजंट : अरे सुनाओ।

वारकरी : कश्यप की पत्नी ताम्रणी को जो बच्चे हुए उसमें काकी नाम की लडकी थी। उसके पेट से कौवे के कुल की शुरआत हुई... अब पुरखों के पिंड का खाना खाने का कॉपीराईट हमें मिला है...। उसकी भी एक कथा है..।

भरमू : अच्छा.. तो वह भी बता दो..।

वारकरी : उत्तर रामायण की कथा है। मरुत राजा ने एक बार राज दरबार की बैठक बुलवायी... और उसमें सभी देवता आए थे...पर रावण को बाहर ही रख दिया था।

भरमू : क्या?

वारकरी : तो रावण छोडता है क्या... उसकी खोजबीन कर आया न दरबार में... वहाँ आए इंद्रादि देवताओं की फुसफुस शुरु हुई। वे सारे पक्षियों का रूप धारण कर उड गए। यम था वहाँ..।

भरमू : जी..।

वारकरी : केवल उसने कौवे का रूप धारण किया और उडकर चला गया। कौवे का रूप धारण करने से अपनी जान बची है ऐसा समझकर यम ने कौवे का आभार माना और कौवों को कॉपीराईट लिखकर दे दिया कि "जब इन्सान अपने पुरखों की पूजा करते समय जो भोग चढाते हैं उसे खाने का पहला मान और अधिकार केवल कौवों को होगा"। (रुककर, निराशा से) फिर भी मैं अस्पृश्य .. अछूत। मेरे बारे में कई अंधश्रद्धाएं हैं....तो भी मैं चौसर खेलूँगा...। अरे ए भरमू...तू बताना ...।

भरमू : मैं नीच कुल का। मृत्यु की आहट देनेवाला। अशुभ पक्षी के नाम से मेरी पहचान। निशाचर, रात का संचारी... पर इस जमीन पर मेरी पूजा करनेवाले भी हैं.... ग्रीक के अथेना का मैं सांगाती, वे कलश की पूजा करते समय मुझे याद करते हैं... मेरा चित्र बनाते हैं.... यह प्राचीन ग्रीक कथा है।

पर सारे संसार ने मुझे मृत्यु का काला साया समझा है। मेरे मात्र फुत्कार से रोमन आगस्टस उड कर गिर गया। चक्रवर्ती कमोडस अरेलियस के मरने से पहले मैं उनके कमरे में प्रवेश किया था। उससे भी डरावना बताऊँ क्या.. ?

वारकरी : हां, बताओ न..।

भरमू : सीजर की हत्या हम सभी गिद्धों ने मिलकर फुत्कार करके जाहिर की थी। यहुदियों के सपने भी में हम दीखें तो भी काफी है... अशुभ हो ही गया समझो... मृत्यु का लेबल उनके माथे पर चिपक गया ही समझिए...उल्लु ने केवल घू भी किया तो कोई बीमार व्यक्ति छाती फाडकर मर जाता है। हम जिस मकान पर बैठ जाते हैं और आवाज़ करते हैं तो उस घर में मृत्यु निश्चित होती है ऐसा लोगों का मानना है। (थोडी देर रुककर। विचित्र सा कपटी, हिंसात्मक भाव चेहरे पर लाकर) पर मैं यहाँ घर के अंदर ही चिल्ला रहा हूँ...पर। (थोडा रुककर) अब हमने पगडी खेल में अपने बाप को.. बापु साब को भी कसौटी पर उतारा है..।

(पगडी की चौसर बिछायी जाती है.. सभी खेलना शुरु करते हैं। गरुड और कौवा जीत जाते हैं। उल्लु हार जाता है। उसका चेहरा उदास हो जाता है।)

एजंट : अरे ये उल्लु... अरे ये कौवे.....।

भरमू : आज्ञा दे...।

वारकरी: आदेश दे...।

एजंट : कहाँ है वह बापू... चलिए...(तीनों नाचते... कुदते..उडते... रंगमंच की परिक्रमा कर बापुसाब के पास आकर उसका गला दबाने लगते हैं। वह छटपटाने लगता है। डर से पसीना पसीना हो जाता है। अपनी सारी शक्ति लगाकर और चिल्लाते हुए बापुसाब गरुड, उल्लु और कौवे को एक ओर ढकेल देते हैं। गरुड, कौवा, उल्लु गायब हो जाते हैं। बापुसाब अपने उस बुरे सपने से जाग जाते हैं। वे पसीने से तरबतर हैं। उनका चिल्लाना सुनकर रुक्कव्वा अंदर से दौडकर आती है।)

रुक्कव्वा : क्या.. क्या हुआ? क्या कोई बुरा सपना देखा आपने?

(अपने आँचल से बापुसाहब के चेहरे का, सीने का पसीना पोंछती है।बापुसाहब डर से कांप रहे हैं।)

बापुसाब : रुक्कु, रुक्कु, वो लोग मेरा गला दबाकर मार देंगे... मैं जिंदा नहीं बच सकता... मर जाऊंगा मैं।

रुक्कव्वा : (धीरज देते हुए) कौन... कौन मार रहा है.... और क्यों... घबराओ नहीं।

बापुसाहब : घर में गरुड, कौवा और उल्लु आकर पगडी का खेल खेल रहे थे...उसमें उन्होंने मेरी बाजी लगा रखी थी... आधा इन्सान और आधा पशु-पक्षी का चेहरा था.... ये सारा अशुभ है।

रुक्कव्वा : सपने आते हैं...जाते हैं... छोटे बच्चे की तरह घबरा रहे हैं आप...।

बापुसाब : नहीं रुक्कु.... ये ऐसा वैसा सपना नहीं था... निगुढ गूढ सपना है... कुछ तो गूढ है... इसमें सबकुछ मेरे खिलाफ ही चल रहा है....यह भू-माता मुझ से दूर जा रही है... ऐसा लग रहा है... रुक्कु...रुक्कव्वा..।

बापुसाब : क्यो? क्या हुआ जी?

बापुसाब : (घबराकर) रुक्कु... वहाँ उस कुएँ पर.. मेरा बाप मोट बना रहा था... माई रोटी लेकर आती थी...हम पेड की छांव में बैठकर खाना खाते थे। नदी का पानी पीते थे...(उद्विग्न होकर) उसके बाद मशीन आयी... पंपसेट..करंट... एक दिन शाम को सिद्धण्णा मिर्च के पौधों को पानी देने गया.. कौवे और उल्लु कुएं पर बैठकर चिल्ला रहे थे। कहीं करंट लगा और आहह... कहते चीखते चिल्लाते सिद्धण्णा कुएँ में गिर पड़ा और फिर ऊपर आया ही नहीं। उसकी लाश ही बाहर आयी।

अब घर के अंदर ही उल्लु, कौवे और गरुड घुस आए हैं.. चिल्लाने लगे हैं... हे भगवान...कौन जाने कहीं मेरी भी लाश ही निकल जाय...क्या पता....(दयनीय होता है.) रुक्कव्वा हताश होकर देखती रह जाती है।)

.....

दृश्य-11

(प्रकाश)

(रात का समय। बापुसाब का घर। रुक्कवा घर में नहीं है। वारकरी, एजंट और भरमू आते हैं।

(सपने का प्रभाव अभी भी ताजा है। एक तरह की मानसिक बेचैनी। खेत बेचने का विषय बापु को सता रहा है।)

बापुसाब : ओहो... आप हैं.. ? यहाँ क्यों आए हैं? (रुककर) कल रात आए थे...अभी तक वापस नहीं गए...और फिर रात में ही आए हैं... ?

वारकरी : क्या काका... क्या बोल रहे हैं आप... हम कब आए थे... और वह भी कल रात...नहीं तो...।

भरमू : विट्ठल मामा तो कल रात मेरे घर पर ही ठहरे थे...

एजंट : हम लोग और कल रात को...

बापसाब :(बीच मे ही) मैं सब जानता हूँ... आप सब झूठ बोल रहे हैं..कल रात यहीं थे आप सब....।

वारकरी : अरे काका... चाहो तो काकी को ही पूछ लो...कहाँ है वो...बुलाओ उसे..रुकिए मैं ही आवाज़ देता हूँ उसे...।

वारकरी : वो नहीं है.... खेत पर गई है...अभी लौटा नहीं है... वही मौका देखकर आए हैं आप लोग...।

एजंट : (बीच में ही) हम तुम्हें साहब जी के पास लेकर जाने के लिए यहाँ आए हैं...तू तो..।

बापुसाब : (बीच में ही) कौन साहब? सभी साहब लोगों से मिला हूँ मैं...चप्पले घिस गयी हैं मेरी।...(थोडा रुककर) तू...तू.. तू तो गरुड है न...।

एजंट : क्या बोल रहा है तू... कौन गरुड... कहाँ का गरुड..।

बापुसाब : और ये कौवा.... काला कौवा... पिंड का खाने आया है...(उडाते हुए) हुश..हुश... चल जा...।

वारकरी : काका... मैं कवठेमाल का वारकरी विट्ठल... कौवा नहीं हूँ...।

बापुसाब : और यह भरमू...मेरा खेत मेरी जमीन बेचने पर तुला है...अपना जाया अपना ही दुश्मन..(थोडा रुककर) हां... यह उल्लु... उल्लु बनकर आया था... इस उल्लु ने घू घू... भी किया था.... आप सभी कल रात गरुड. कौवा और उल्लु बनकर आए थे... नचा नचा कर थकाया और फिर मेरा गला दबाकर मारने लगे थे मुझे.. हां... हां... जान से मार रहे थे मुझे...।

वारकरी : काका, कुछ सपना देखा होगा आपने.... बुरा सपना...।

बापुसाब : हां... पता नहीं सपना था या हकीकत...।

वारकरी : काका, वो सपना हो या भ्रम... छोड दीजिए.... आपको साहब ने बुलाया है.... और हम आपको लिवाने आए हैं..।

बापुसाब : मेरा खेत, मेरी जमीन बचेगी? तो ही आऊंगा..।

एजंट : हां... उसके लिए ही तो आपको लिवाने आए हैं...।

भरमू : (विचारों की तंद्रा से जागते हुए) हां.. हां...चलिए...।

बापुसाब : नहीं... भरमू ... तेरा दिमाग ठिकाने पर नहीं है.... तेरा मन चंचल हो रहा है.... कुछ तो लोचा है...।

एजंट : (बीच में ही) कोई लोचा – वोचा नहीं है... ।

बापुसाब : वो... वोचा मतलब....।

वारकरी : काका..कुछ भी... कहने के लिए कहा है...।

एजंट : आपका काम होना है कि नहीं...।

बापुसाब : होना चाहिए न... उस के लिए तो इतनी खीटपिट कर रहा हूँ।

एजंट : अगर ऐसा है तो फिर चल....(गूढ आवाज़ में) एक ही वार में दो टुकडे..।

वारकरी : हां एक वार में दो टुकडे।

(भरमू हडबडाया हुआ... बेचैनी बढती है... अपराधबोध का भाव)

बापुसाब : (बेचैन होकर और अधिक घबराता है) ठीक है..आता हूँ.... एक वार दो टुकडे.... अपने खेत के लिए मैं कुछ भी करूँगा...हां..चलिए....(अंदर जाकर तौलिया लाता है और कंधे पर ओढ लेता है) (बुदबुदाता है) एक वार दो टुकडे...।

(सभी जाते हैं। बापुसाब आगे और उनके पीछे एजंट, वारकरी, और भरमू... अंभग सुनाई देता है।)

अभंग

अंधेरा

.....

दृश्य-12

(प्रकाश... विधायक का घर। अपने कमरे में विधायक जी बैठे हैं। फाईल देख रहे हैं। देखते देखते चेहरा खिल जाता है। अधिकारी भी खुश नज़र आते हैं। वे एक दूसरे को देखते हैं।)

विधायक : बैठिए।

अधि-1 : ठीक है साहब।

विधायक : धिस इज सरप्राईज..। यह कैस संभव हुआ?

अधि-2 : कल उन तीनों को बुलाया था।

विधायक : कौन तीनों?

अधि-2 : वारकरी, एजंट औऱ भरमू..।

अधि-1 : उनके हथेली पर आपका आदेश रखा...।

विधायक : ग्रेट। (थोडा रुककर) आपको नालायक, फट्टु कहा था... पर आप लोगों ने...

अधि-1 : यदि आपने डांटा नहीं होता तो काम होता भी या नहीं पता नहीं...।

अधि-2 : द रिजल्ट इज विथ यू सर।

अधि-1 : भगवान के प्रसन्न होने तक ...छोडना नहीं... ऐसी जिद से काम किया है साहब।

विधायक : एनी वे कांग्रेटस। आपकी मेहनत देखकर मैं खुश हूँ।

अधि-1 : आपका अभिनंदन करना चाहिए।

विधायक : वह किसलिए? किंतु.... मेरा काम हो गया.. ठीक है।

अधि-1 : अखबार भरकर खबर आयी है।

अधि-2 : देखिए... (अखबार पढते हुए) "ब्रिटिशकालीन फार्म अब नीजि मालिकाना... औषधीयुक्त वनसंपत्ति संकट में। और नीचे एक और खबर है"... "ब्रिटीशकालीन तालाब में बापुसाब का अंत.... खुन या आत्महत्या"...देखिए...। (थोडा रुककर)

विधायक : बापुसाब की मृत्यु के लिए संवेदना व्यक्त करने के लिए एक प्रस नोट रिलीज कीजिए.... उसकी आत्मा को शांति मिले।

(विधायक पीठ करके चले जाते हैं..अभंग सुनाई देता है।)

अभंग

.....

दृश्य-13

(प्रकाश। रात का समय। नीरवता। उसी सर्कल में गांधी जी का पुतला। वहाँ बापुसाब को श्रद्धांजली देने के लिए एक फ्लैक्स लगाया गया है। उसके दूसरी ओर फैक्टरी का शुभारंभ होने का फ्लैक्स। सबका निरिक्षण कर निवेदक बापु के पुतले के पास आकर बैठता है। बापुसाहब के साथ बातें करने लगता है।

निवेदक : मन बहुत अशांत है बापु.. अंदर बहुत यातना हो रही है। दुख को निगलना....। (सिगरेट निकालता है) आपके सामने सिगरेट नहीं पीनी है। (फेंक देता है। मैं तभी आपको कहा था.... खोलो अपनी आँखे खोलो.. अपनी तीसरी आँख से बुरे को जलाकर नाश कर दो....कहा

था...पर तुमने आँखें खोली ही नहीं....क्या हुआ? आखिर हुआ क्या? (बापु की ओर ईशारा करते हुए) और एक बापु का चित्र लटकाया गया। उसके जीवनचित्र में तुम्हारों ग्राम जीवन का सपना साकार हुआ है क्या.. इसे देखने की कोशिश की... पर तुम्हारा सपना सपना ही रहा...यह सब देखकर मन खिन्न हुआ है...मैं सत्वहीन हो गया हूँ...कपट और धोखा देनेवाला संसार देखकर हताश हो गया हूँ मैं... कमजोर हो गया हूँ....(कहकर नीचे गिर पडता है और वहीं लेट जाता है।कुछ समय व्यतीत होता है... रुक्कव्वा आती है... उसके चेहरे को प्यार से सहलाती है। वह जाग जाता है।)

निवेदक : क...क ..कौन..कौन है आप.. ?

रुक्कव्वा : मैं रुक्कव्वा... रुक्मीणी.... बापुसाब खटपटे की विधवा औरत.... हताश मत हो मेरे लाल.... बापू.. बापू साब गया तो क्या हुआ... हम असंख्य बापुओं को तैयार करेंगे.... कपट और धोखा नहीं...मशीनी नहीं...प्राकृतिक... गांधी के सपनों के बापु को निर्माण करेंगे.. गाँव निर्माण करेंगे... चल..चल मेरे लाल...।

निवेदक : और तुम्हारा खेत.. वह जमीन..। बापुसाब का खेत...।

रुक्कव्वा : वह कहीं नहीं जाएंगी... वह भू माता है... माँ को छीन लेना इतना सरल नहीं होता बेटे...मेरा अदालत पर, न्यायदेवता पर विश्वास है...बापू का सपना सच करेंगे...(हाथ से पकडकर उसे खींचते हुए ले जाती है।) (दोनों के जाते समय..अभंग सुनायी देता है।) अभंग।

(समाप्त)

****